राम के वनवास का समाचार सुनते ही महल में ही नहीं, पूरी अयोध्या नगरी में उदासी छा गई थी । अयोध्या की प्रजा बहुत दुखी हुई । राम भी राजा दशरथ और कैकई से मिलने पहुंच गए । राम ने अपने पिता को थका मांडा और उदास देखा । वे समझ गए कि समस्या का एकमात्र समाधान कैकई की मांग पूरी करते हुए अयोध्या से निकल जाना ही है । राजा दशरथ की प्रतिष्ठा बचाने का यही एक रास्ता उन्हें लगा । राम ने अपने पिता को समझाया कि भरत उनसे अधिक योग्य है और राजा बनने का अधिकार उसी का है । उन्होंने कहा कि वे तो आध्यात्मिक जीवन बिताना चाहते हैं जो कि सुख-सुविधाओं भरे महल में संभव नहीं है । अंत में राम ने कहा कि अपने माता पिता की आज्ञा पालन उनका धर्म है और वे किसी का ह्रदय दुखी नहीं करना चाहते । इतना कहकर राम ने अपने माता पिता के पैर छुए और चुपचाप कक्ष से निकल गए ।